जय माँ शारदे

संगीत के स्वरों

(1) प्रश्न संगीत (MUSIC) किसे कहते है

उत्तर => संगीत तीनो कालाओं को मिलकर जैसे गायन, वादन, एवं नृत्य को संगम से संगीत कहते हैं।

स्वर :—

ध्वनियो के प्रायः दो भेद होते हैं – स्वर तथा कोलाहल। साधारणतः जब कोई ध्वनि नियमित और आवर्त कम्पनो से मिलकर उत्पन्न होती हैं, तो उसे स्वर कहते हैं

नियमित आन्दोलन - संख्या वाली ध्वनि स्वर कहलाती हैं। यही ध्वनि संगीत के काम में आती हैं जो कानों को मधुरता प्रदान कर मन को प्रसन्न करती हैं इसी ध्वनि को संगीत की भाषा में नाद कहा जाता है

स्वर के भेद :—

1. **शुद्ध स्वर** => जब सा रे, ग म, प ध नि स्वरो में श्रुतियों का क्रम 4, 3, 2, 4, 4, 3, 2 रहता है तो उन स्वरों को शुद्ध स्वर कहते है। इन शुद्ध स्वरों के पूरे नाम :—

1. षडज 2. ऋषभ 3. गान्धार 4. मध्यम
5. पंन्चम 6. धवैत 7. निषाद।

2. **कोमल स्वर** => जो अपने स्थान से नीचे की ओर जाते है, उन्हे कोमल स्वर कहा जाता है, जैसे — रे, ग, ध, नि।

3. **तीव्र स्वर** => जो अपने स्थान से सदैव उपर की ओर जाते हैं, तीव्र स्वर कहलाते है — जैसे 'मे'।

Pro - R. K. Raman

Scanned by CamScanner

सप्तक :—

सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। इन स्वरों का क्रम होना आवश्यक है। सप्तक तीन प्रकार के होते है —

1. मन्द्र सप्तक
2. मध्य सप्तक
3. तार सप्तक

1. मन्द्र सप्तक ⟹ जिन स्वरों की आवाज मध्य सप्तक से आती है, उन्हे मन्द्र सप्तक कहते है। इनको बोलने पर हृदय पर जोड़ परता है। मन्द्र सप्तक के स्वरों की पहचान है, स्वरों के नीचे बिन्दी। जैसे — सा, रे, ग, म, प, ध, नी

2. मध्य सप्तक ⟹ मन्द्र सप्तक से दुगुनी आवाज को 'मध्य सप्तक' कहते हैं। यह स्वर न तो अधिक ऊँचा और न अधिक नीचा होता है। मध्य सप्तक में हम आसानी से गा लेते है, मध्य सप्तक मे गाते समय गले पर जोर पड़ता है। इसके स्वरों पर कोई चिह्न नही होता है; जैसे — सा, रे, ग, म, प, ध, नि।

3. तार सप्तक ⟹ 'मध्य सप्तक' से दो गुनी ऊँची आवाज होने पर 'तार सप्तक' कहलाते है। तार सप्तक की उत्पत्ति मस्तिष्क से मानी जाती है। इस सप्तक को गाते समय तालु पर जोर पड़ता है तार सप्तक में लोग सां, रें, गं, मं, पं, धं, निं इससे अधिक ऊँचा बहुत कम लोग गा पाते है। इसके लिए रियाज की आवश्यकता होती है। तार सप्तक के स्वरों की पहचान है स्वर के ऊपर बिन्दु जैसे — गरेंग, सारें पंधंनिं।

Pro - R.K. Raman

Scanned by CamScanner

Date
Page

अलंकार या पलटा

आरोह ⇒ 1. सा रे ग म प ध नि सां

आवरोह ⇒ सां नि ध प म ग रे सा

आरोह :-

नीचे स्वर से ऊँचे स्वर तक चढ़ने या गाने की क्रिया को आरोह कहते है, जैसे- हमें षड्ज से आगे स्वर बोलने हैं तो - सा रे ग म प ध नि , यह आरोह क्रम है

अवरोह :-

ऊँचे स्वर से नीचे स्वरों पर आने या गाने की क्रिया को अवरोह कहते है। जैसे षड्ज स्वर के नीचे के स्वर बोलने है तो ' सां नि ध प म ग रे सा' यह 'अवरोह' क्रम है।

अलंकार :- कुछ नियमित वर्ण समुदायों को अलंकार कहते है। '**अलंकार**' शब्द का अर्थ है, आभूषण या गहना। जिस प्रकार आभूषण शारीरिक शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकारों के द्वारा गायन की शोभा बढ़ जाती है।

अलंकार को पलटा भी कहते है। गायन सिखाने से पहले विद्यार्थियो को अलंकार सिखाये जाते है, क्योकि इनके बिना न तो अच्छा स्वर ज्ञान ही होता है न ही उन्हे आगे संगीत कला में ही सफलता मिलती हैं। अलंकार वर्ण समुदायों में ही होते हैं। अलंकार राग विस्तार में सहयता होती हैं। अलंकार द्वारा संगीत आकर्षक सुन्दर लगता है।

Pro - R.K. Raman

Scanned by CamScanner